

DPN 6208

Title : चक्रसम्बर विशुद्धि CAKRA SAMBARA VISUDDHI

Run. No. 6899

Cat. No.

Micro. No.

Subject ॥ तन्त्रिकी

Tantric Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 16 x 6.5

Folios 8

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः
 नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः

माहल्लि वृथा वृथा विष्णु नया कालनी किन ना हुरु वदनी नमा
 मि मलमंदरी ३ न कोमा विवका वल्लुंगी सकि हसा मना
 रुला किन ना वी वृथीय नमामि भयूलवाहीनि ४ न वेरु
 वीशाम वल्लु सां वका हस मना रुगी किन ना विष्णु वृथीय नमामि ग
 वृथा गनी ॥ ५ ॥ वा वादि ययान दिव धाल वृथां रुथं कली

नय वृथा ला रुयाम कटक्षिति सार्थि कल्ल वृथा ६ कया लंमि
 लसिन म ७ ॥ १ ॥ वा ववाधि मृन छदा वृथा दे धान लन म ८
 सवला कार्य कालि ला विष्णु वका दुमोलिन ॥ २ ॥ मि
 था दृष्टि यका नार्थ विरु का सा यन नम ९ वृथाल विना सार्थि रि
 वरुला कट दंष्ट्रिन ॥ ३ ॥ ॥ ध्यान यल्ल विष्णु वही वद दया

15

10

5

चक्रयमि ॥ सनादिनमाकां क मुरुयनागछुदिक ॥ १५ ॥
याद्यदिनाययं या हारु वरुनां च विछुदिक ॥ मछुछु यात्रिलसवे ह
जीवं या कयनमथा ॥ १६ ॥ ॥ छुछु सवेसनी यय रु सधु मनी सनम
॥ छुछु सय छु वरुदिक नय समरुल रुके ॥ १७ ॥ ॥ छीछासा
मजनमा न विछुदिक नु वा सरुं ॥ वा वरु मय छु रु म छुं ॥ कनला

का रमुदुनकां ॥ १८ ॥ ॥ छुछु मछा यका मयल स विछुदिक म
कं स माय ॥ १९ ॥
॥ छुछु मालनमा मुयं रव माल ल करि कया नय रु सवे विआ यदा
कं य छु मका जानमा मुयं ॥ २० ॥ ॥ छुछु

ॐ का वायव्यमूका रुं सधूमिंदसमसिर्गं वृद्धीमू द जायकं नमावेन
चतुर्दिगं ॥ १ ॥ ॐ का वायव्यनीयारुं युद्धगजासमसिर्गं रु
स्यसम दयायकं नमायू कायनधमनं ॥ २ ॥ ॐ का वायव्य
हमारुं दक्षिणसमसिर्गं वृद्धमू दायव्यं वृद्धं नमामि तलस
रुवं ॥ ३ ॥ ॐ का वायव्यमूका रुं यथीममयू रासमसिर्गं

ध्यानमू दायव्यं नाथं जूमिगारुं नमामिदं ॥ ४ ॥ ॐ का वा
यव्यममारुं उरुयगयू दासमसिर्गं जूरुयमू दासमा दू कां जू
माद्यसिद्धि नमामिदं ॥ ५ ॥ ॐ सर्ववापिमला यमव्यं गुणनाथि
यनजिनं त्रिभक्तुं सदा वाजं यथेव वृद्धं नमास्तु ॥ ६ ॥
नित्रात्रं रुनिनाका ययरा रुजा निप्रयीनि येरा वृद्धसिर्गं वृद्धं

वदसत्वनमस्तु ॥ १ ॥ नमस्तु भक्तिसिन्हाय धर्मसुत्राय
नमस्तु जगद्गुरु जगन्नाथं भक्तिसिन्हाय नमस्तु ॥ २ ॥ जसा
धर्मसुत्रं कथितं लुकिता वामात्रादिनं कथं मयि यदया दूष्य
थ दूषाजि वा दूष्यं वृद्धास्वह वनजगता वाधिसत्त्व दूष्यं ॥ ३ ॥
जगत्मा हं तु पुत्रावा हं तु पुरवा नथा
गन्तव्यं नैव नैव यथा निवृत्तं हं वृत्तं

15

10

5

0

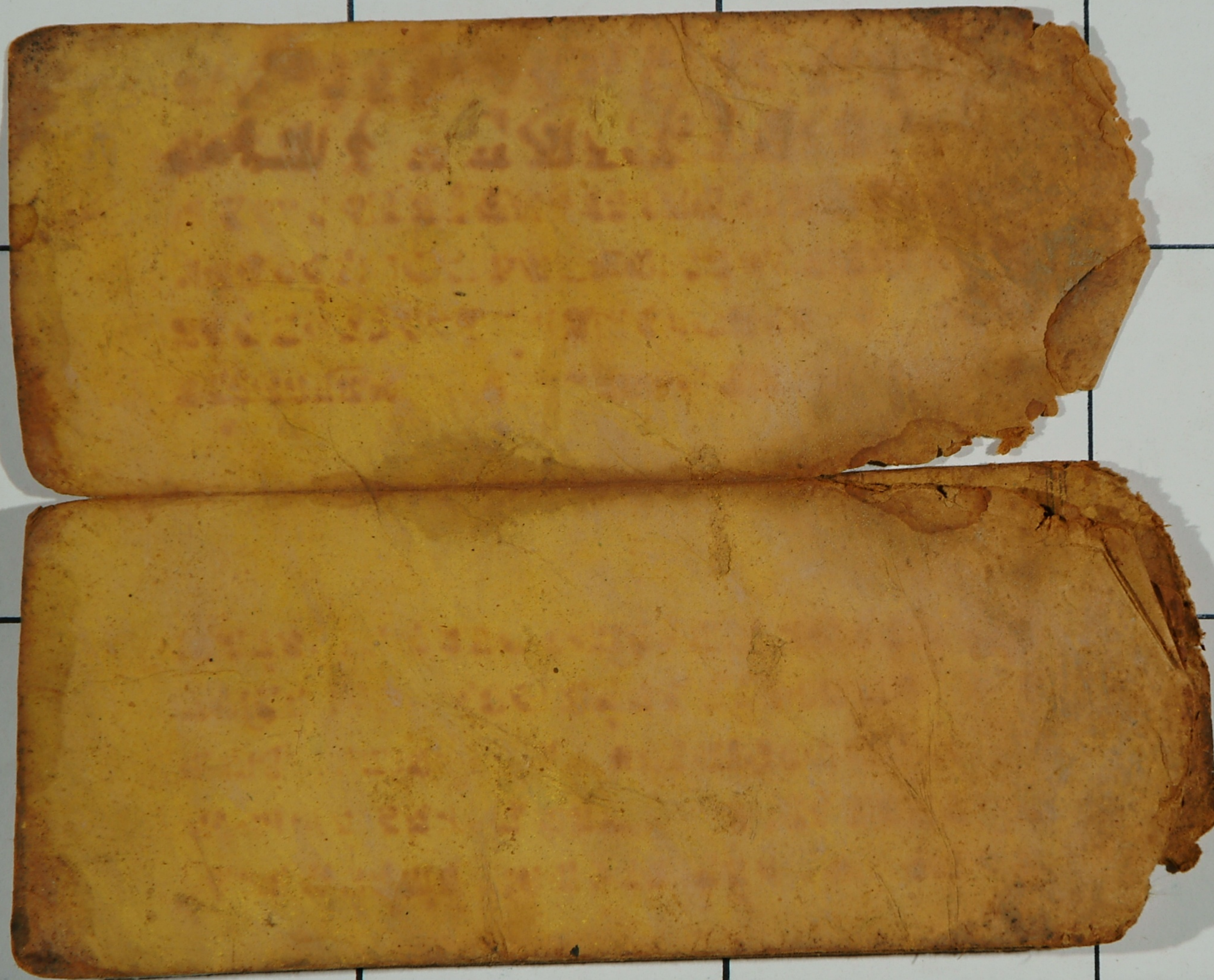
CMS

5

10

15

20



15

10

5

0

CMS

5

10

15

20



15

10

5

0

CMS

5

10

15

20



८३

कालमि कालानां दृष्टिं ह्युच्चाति चक्रय ॥ द्विष्य द्युत्थाया दानां ह्युच्चा
द्वा देवा रुवा ॥ १ ॥ यथे ह्यनमयी वक्रः माला हिलमि ध्याजिल
सर्वरुग केशा ह्युच्चा कया लिध्यायि यनम ॥ ३ ॥ मयमि सि
क नृपत्या कृष्ण कौ श्रुद ह्युच्चा क ॥ लीध्याय यवला यष्ट म हारु नव
यविक ॥ ४ ॥ रुया ह्यु नृ कया वि वा दाना आलिगिन नम

शायक ह्यनवि ह्यु दृष्टी वक्रा म कया यथ ॥ ५ ॥ यथु या
प्रमि ना ह्यु या वा मय द्वां म ध्याजिल ॥ ६ ॥ रुग कया रुवि ना मर्थ रुग
खध्याय लनम ॥ ७ ॥ यनादन सर्ववृद्ध यथा यनं ॥ कुरु
म नृ काया लो दध्या नाय क नम ॥ ८ ॥ काय वा क्रि रु द
याजि रु रुय य ह्यु या न वं रुवा कय वि क त्या नां रु दार्थ क रुया